11 जून, 2021, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी (उ0प्र0)

पशु पोषण और उत्पादकता के लिए चारा वृक्ष – डा. श्रीवास्तव

भारत@ 75–भारत का अमृत महोत्सव मनाते हुए केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी द्वारा **''पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता**'' विषय पर एक लोकप्रिय व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन/व्याख्यान में प्रख्यात वैज्ञानिक डा. ए. के. श्रीवास्तव, पूर्व निदेशक एवं कुलपति भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल और वर्तमान में सदस्य, कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली ने कृषि प्रणाली में छोटे जुगाली करने वाले और मुर्गी पालन सहित पशुधन की ऐतिहासिक भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। आज भारत में लगभग 535 मिलियन पशुधन आबादी है, जिसने देश में दूध उत्पादकता बढ़ाने में अपना अहम योगदान दिया है। पिछले तीन दशकों में भारत में दूध का उत्पादन 55.6 मिलियन टन से बढ़कर 198 टन हो गया और प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 178 ग्राम/दिन से बढ़कर 394 ग्राम/दिन हो गयी। वर्तमान में भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है, जिसमें छोटे और सीमांत किसानों को बहुत बड़ा योगदान है। फिलहाल, देश में अभी भी 60% से अधिक चारे की कमी है। इसलिए, पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता पर चर्चा करते समय चारा उत्पादन और चारा फसल उत्पादकता में वृद्धि समान रूप से महत्वपूर्ण है। शुष्क और अर्ध–शुष्क जलवायु परिस्थितियों में, जैसे कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में, पशुपालन किसानों का मुख्य सहायक व्यवसाय है। छोटे और खंडित जोत के कारण किसान शायद ही कभी हरा चारा उगाते हैं, खास कर गर्मी के महीनों में। कई पेड़ प्रजातियाँ हैं, जो जानवरों को स्वस्थ और उत्पादक बनाए रखने के लिए प्रोटीन से भरपूर हरा चारा देती हैं। उदाहरण के लिए, अरडू (ऐलेन्थस एक्सेल्सा) और सुबबूल तेजी से बढ़ने वाले और पौष्टिक पेड़ हैं तथा उनकी कटाई एवं छंटाई करने से जानवरों के लिए भी हरे चारे की माँग को पूरा करने के लिए कृषिवानिकी प्रणाली के तहत इसे उगाया जा सकता है। उन्हें फील्ड बाउंड्री/बंड पर लगाया जा सकता है, इसके लिए अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता नहीं पड़ती है। हालांकि विभिन्न सरकारी एवं वैज्ञानिक प्रयासों के माध्यम से दूध उत्पादकता में सुधार हो रहा है, लेकिन

उत्पादकता को बनाए रखने के लिए, विशेष रूप से कम अवधि के दौरान भूमि और पानी की माँग के बिना हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि दूध की गुणवत्ता पशु स्वास्थ्य से संबंधित है, इसलिए उन्होंने पशु चिकित्सा क्लीनिकों के माध्यम से राष्ट्रीय पशु स्वास्थ्य मिशन को मजबूत करने और संबंधित जनशक्ति की क्षमताओं का निर्माण करने का आह्वान किया। इस अवसर पर अपने भाषण में डॉ. ए. अरूणाचलम, निदेशक, केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी ने बुन्देलखण्ड क्षेत्र के किसानों को पशुधन क्षेत्र के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने मुख्य रूप से हरे चारे की प्रचुर उपलब्धता के कारण क्षेत्र में बारिश के मौसम के दौरान दूध की कीमतों में गिरावट पर विशेष रूप से प्रकाश डाला, जबकि कृषिवानिकी के दायरे का दोहन कम मौसम के दौरान पेड़ के चारे के उत्पादन के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा उत्तरी भारत में फिकस रगोसा (पाकड़) की हरी टहनियों का विपणन घरेलू पशुओं के लिए शीर्ष चारे की स्थिरता एवं महत्व को दर्शाता है। डॉ. अरूणाचलम ने इस बात पर प्रकाश डाला कि बुन्देलखण्ड में परासई–सिंध जलागम में कृषिवानिकी के हस्तक्षेप के परिणाम स्वरूप गाँव को चारे की कमी से चारा अधिशेष में परिवर्तित कर दिया गया। डॉ. ए. के. श्रीवास्तव ने किसानों से कृषि प्रणालियों में पशुधन एकीकरण के लिए वृक्ष आधारित चारे को अपनाने की अपील की। इस कार्यक्रम में भारतीय कृषिवानिकी अनुसंधान परिषद के संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, अखिल भारतीय समन्वित कृषिवानिकी परियोजना एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों के 300 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया।